• कविताएं...

ये सफर मेरा आजमाया है

ये सफर मेरा आजमाया है,
धूप मेरी है मेरा साया है।
भूल जाती हैं मंजिलें अक्सर,
रास्तों ने मुझे निभाया है।
मैं जहां जा के खत्म होता हूं,
खुद को मैंने वहीं पे पाया है।
इतनी मुश्किल से तो गुमाया था,
क्यूं मुझे फिर से ढूंढ लाया है।
सबसे कहता है वो मैं कैसा हूं,
सिर्फ मुझको नहीं बताया है।
अब मेरा जश्न खुश-नुमा होगा,
मैंने खुद को नहीं बुलाया है।
सारे कर्जे चुका दिए लेकिन,
मेरा मुझ पे अभी बकाया है।
चल मुखौटों के दाम दुगने कर,
आइना ले के कोई आया है।

■ *नवीन जोशी*

फांसी

बधिक! तुम पहना दो जयमाल।
प्रमुदित मन जीवन से नाता,
तोड़ चुका इस काल।
अस्ताचल के श्याम शिखर पर,
छवि विहीन बेहाल।
दिन-मणि देख रहा है मुझको,
अब दो फंदा डाल।
जिस पथ पर आरूढ़ हुआ मैं,
यद्यपि वह विकराल।
किंतु इसी पथ पर चलने में,
मिलती विजय विशाल।
भूल गया था, भटक रहा था,
देख विश्व-भ्रम जाल।
नत मस्तक हो धूल-धूसरित,
कर लूं उन्नत भाल।
चर्म चक्षु है बंद-
देखता हृदय-हृदय की चाल।
पल-पल पर प्रणयेश सुन रहा,
सर्वनाश की ताल।

■ *प्रणयेश शर्मा*

• कहानी/–डॉ. पद्मा शर्मा

दूर होती रोशनी ...

बच्चों की लम्बी कतार ...

कई स्कूलों के बच्चे अपनी-अपनी यूनीफॉर्म में पंक्तिबद्ध थे। सपना भी अपने स्कूल की लाइन में खड़ी थी। दो घण्टे व्यतीत हो गये लाइन में खड़े ... अब तो पाँव भी जबाब देने लगे थे। पेट भी खाने की जुगाड़ देख रहा था। अलग-अलग स्कूलों की पंक्ति, पंक्ति के आगे स्कूल का बैनर लिए दो-दो बच्चे खड़े थे। बैनर भी स्पेशल बनबाये गये थे जिसके दोनों सिरों पर नेफा टाइप सिलाई थी ताकि उनमें डण्डे फंसाये जा सकें।

एक दिन पहले ही स्कूल की सभी कक्षाओं में सूचना आ चुकी थी कि सभी बच्चे अपने साथ दो लंच बॉक्स लेकर आयें। स्कूल के बाद सरकारी कार्यक्रम में जाना है। सपना ने एक टिफिन रेसिस में और एक छुट्टी के बाद खा लिया था। प्यास से उसका गला चटक रहा था। पानी की कोई व्यवस्था नहीं थी और न ही धूप से बचने का कोई साधन ...। सपना ने अपने साथ आयीं स्कूल की मैडम से पूछा- ''मैडम कब निकलेगी रैली ?''

'' हाँ ... देखो अधिकारी आते ही होंगे, वे आकर हरी झण्डी दिखायेंगे और रैली शुरु हो जायेगी।''

अन्य लड़कियाँ भी शिकायत भरे लहजे में बोलीं - '' मैडम पैर दुखने लगे, हम बैठ जायें क्या ? ''

'नहीं, बैठो नहीं बस अधिकारी आते ही होंगे। '' अन्य बच्चों की ओर इशारा करते हुए कहा- ''देखो सब बच्चे खड़े हैं।''

सपना ने अपने आगे खड़ी सुनीता से कहा- यही उत्तर दस बार सुन चुके हैं कि अधिकारी आ रहे हैं .. ये लोग क्यों नहीं सोचते कि हमें भूख लग रही होगी... हम थक गये होंगे... ।'' सबकी अपनी-अपनी परेशानियाँ थीं, सबको अपने-अपने काम याद आ रहे थे ,सबके मन में चिंताएँ ... ''घर कब लौटेंगे''

''स्कूल का होमवर्क भी करना है।''

''मम्मी की तबियत खराब है, खाना बनाना है।''

''मुझे भाई को पढ़ाना है।''

ग्वालियर संभाग के शिवपुरी जिले में चुड़ैल छज्जा, भूराखो, भरखा खो, परी बरी का झौरा जैसे कई ऐतिहासिक और प्रागैतिहासिक स्थल है। यहाँ तात्या टोपे को फांसी भी लगायी गयी इसके प्रमाण मिलते हैं। मुगलों के शासनकाल में शिवपुरी मालवा सूबा नरवर का सदर मुकाम था। राजा अनूपसिंह को मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर ने नरवर का जागीरदार बनाया। 17वीं एवं 18वीं शताब्दी में शिवपुरी सिंधिया राजवंश के अधीन रहा। यह सिंधिया राजवंश की ग्रीष्मकालीन राजधानी के नाम से प्रसिद्ध था। यहाँ स्थित छत्रियाँ सिंधिया राजवंश की देन हैं जो स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। यहाँ माधव नेशनल पार्क है जिसमें जार्ज कैसल की कोठी स्थित है। सन् उन्नीस सौ ग्यारह मे ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम

तभी एक जीपनुमा गाड़ी ने ग्राउण्ड में प्रवेश किया। बच्चों के चेहरे चमक उठे, चलो अब तो अधिकारी आ गये जल्दी रैली निकले और जल्दी घर जायें।

जीप से कुछ लोग उतरे और दो तीन कार्टून उतारे गये। सपना ने देखा बच्चों की आँखों में आशा जाग गयी। शायद इन कार्टून में नाश्ता होगा जो हमारे लिए लाया गया होगा। दो लोग कार्टून लेकर हॉल की तरफ चले गये...

भारत के दौरे पर आए थे उनके द्वारा बाघ का शिकार और रात्रि विश्राम करने हेतु जार्ज कैसल का निर्माण करवाया गया।

तभी एक जीपनुमा गाड़ी ने ग्राउण्ड में प्रवेश किया। बच्चों के चेहरे चमक उठे, चलो अब तो अधिकारी आ गये जल्दी रैली निकले और जल्दी घर जायें। जीप से कुछ लोग उतरे और दो तीन कार्टून उतारे गये। सपना ने देखा बच्चों की आँखों में आशा जाग गयी। शायद इन कार्टून में नाश्ता होगा जो हमारे लिए लाया गया होगा।

दो लोग कार्टून लेकर हॉल की तरफ चले गये।

थोड़ी ही देर में अंदर से खबर आयी कि हर स्कूल का एक-एक व्यक्ति अन्दर आकर रैली में आये बच्चों की संख्या के हिसाब से मोमबत्ती ले लें और बच्चों को बांट दें।

सभी स्कूलों के प्रतिनिधि के रूप में कुछ लोग अन्दर जाने लगे।

मैडम ने कहा - ''सपना चलो अन्दर मेरे साथ ... मोमबत्ती लेकर आते हैं।'' सपना बिना कुछ कहे मैडम के पीछे-पीछे चल दी। अन्य स्कूलों के सर मोमबत्ती लेने के लिए भीड़ लगाए थे। मैडम मोमबत्ती बांटने वाले के पास तक नहीं पहुँच पा रही थीं पुरुषों को धकेलकर उनके बीच से जगह बनाकर अन्दर तक पहुँचना मुश्किल हो रहा था। भीड़ में मैडम की साड़ी का पल्ला खिंच गया और उसमें लगी पिन के स्थान से साड़ी फट गयी। यह देख सपना मैडम के आगे हो गयी।

देने वाले कह रहे थे- ''एक पैकेट में छह मोमबत्ती हैं उसी हिसाब से लेना।''

आवाजें आ रही थीं- ''हमें सात पैकेट दे दो''

''हमें दस पैकेट दे दो''

''हमें बारह पैकेट दे दो''

इस बंदरबांट में सपना को लगा उसके सीने को किसी की कोहनी टच कर रही है, फिर लगा किसी का हाथ भी है। वह अपनी जगह खड़ी रह गयी। मैडम कहने लगीं- ''सपना आगे बढ़ो'' वो मैडम को कैसे कहे कि उस पर क्या गुजर रही है। सपना ने देखा एक कोने में दो सज्जन बैठे अपने-अपने बैग में मोमबत्ती के पैकेट रख रहे थे उन्होंने चारों ओर देखा फिर अपने-अपने बैग में मोमबत्ती रखे पैकेट को तौलिए से अच्छी तरह छुपाया और जल्दी से बैग की चैन बंद कर दी। सपना सारा माजरा समझ गयी। बड़ी मुश्किल से सपना को मोमबत्ती मिल पायीं।

मैडम ने मोमबत्ती अपने स्कूल के बच्चों में बांट दीं। सपना ने मोमबत्ती अपने बैग में रख ली उस ने सोचा लाइट चली जाती है फिर पढ़ने में परेशानी होती है। तब ये मोमबत्ती काम आयेगी। सभी बच्चे और टीचर अपने अपने हाथों में मोमबत्ती लिए थे। वही सज्जन जो बैग मे मोमबत्ती रख रहे थे, जलती मोमबत्ती लेकर आए और सबकी मोमबत्ती जलाने लगे। सपना ने सोचा अभी मोमबत्ती जला लूँगी तो जन्दी ही खत्म हो जायेगी। मोमबत्ती जलाने वाला व्यक्ति सपना से बोला- तुम्हारी मोमबत्ती कहाँ है?

बैग में रखी है।

बैग में रखने के लिए नहीं दी गयी हैं वह कड़क स्वर में बोला - यहाँ खैरात नहीं बंट रही जो घर ले जाओगी। सपना को बहुत बुरा लगा। सारे बच्चे उसे देखने लगे, वह शर्म से पानी-पानी हो गयी। वह कहना चाहती थी कि मोमबत्ती चुराकर तो आप ले जा रहे हो ... देखो अपने बैग में कितने पैकेट रख लिए।

जलती मोमबत्ती हाथ में पकड़े बच्चों के साथ, स्कूल के नाम के बैनर लगाकर, कुछ सर और मैडम फोटो खिंचा रहे थे। तभी दूसरे सर ने व्यंग्य भरे लहजे में कहा- ''क्यों राष्ट्रपति पुरस्कार पाने के लिए फोटो खिंचवाये जा रहे हैं। इस तरह के फर्जी फोटो खिंचवाकर पुरस्कार की दौड़ में शामिल होने की फाइल तैयार की जायेगी।''

सपना ने अपनी सहेली से पूछा -''ये रैली क्यों निकल रही है ?''

''ज्यादा तो नहीं पता पर दिल्ली में कोई केस हुआ है इसलिए ये रैली निकल रही है। लड़कियों की रक्षा के लिए'' **-जारी**

• शायरी...

हसीं है शहर तो उजलत में क्यूं गुज़र जाएं
जुनून-ए-शौक़ उसे भी निहाल कर जाएं
ये और बात कि हम को नज़र नहीं आए
मगर वो साथ ही रहता है हम जिधर जाएं

◆ ◆ ◆

हयात-ए-इश्क़ का मक़्सूद बन गई आख़िर
ये आरज़ू कि तिरा नाम ले के मर जाएं
ये राह-ए-इश्क़ है आख़िर कोई मज़ाक़ नहीं
सऊबतों से जो घबरा गए हों धर जाएं

◆ ◆ ◆

पहुंच के मंज़िल-ए-मक्सूद पर ही दम लेंगे
कि चल पड़े हैं तो किस मुंह से लौट कर जाएं

-दिल अय्यूबी

◆ ◆ ◆

चश्म-ए-नर्गिस जा-ए-शबनम ख़ून रोएगी नदीम
मैं ने जिस दिन गुलसितां का राज़ इफ्सा कर दिया
क़ैस ये मेराज-ए-उल्फ़त है कि एजाज़-ए-जुनूं
नज्द के हर ज़र्रे को तस्वीर-ए-लैला कर दिया

-एहसान दानिश

• खामोश रात की तन्हाई में...

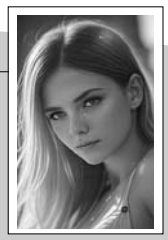

खामोश रात की तन्हाई में
जब कभी
खामोश रात की तन्हाई में
सर्द हवा का इक झोंका
मुहब्बत के किसी अनजान मौसम का
कोई गीत गाता है तो मैं अपने माज़ी के
वर्क पलटती हूं तह–दर–तह यादों के जजीरे पर
जून की किसी गरम दोपहर की तरह
मुझे अब भी तुम्हारे लम्स की गर्मी वहां महसूस होती है
और लगता है तुम मेरे करीब हो। *फ़िरदौस ख़ान*